Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 7 | JULY 2019

तुलसीदास का रामभक्ति साहित्य: सामाजिक और मानवतावादी दृष्टिकोण

('RAMBHAKTI LITERATURE OF TULSIDAS : SOCIAL AND HUMANISTIC PERSPECTIVES')

DR. SANJEEV KUMAR [1]

[1] ASSISTANT PROF IN HINDI, GOVT. COLLEGE BEETAN, DISTT UNA (HIMACHAL PRADESH)- 176601

ABSTRACT:

गोस्वामी तुलसी दास हिन्दी रामभक्ति काव्यधारा के उन श्रेष्ठ कवियों में से हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति में श्रेष्ठ तत्वों को समाहित कर उसे जन-जन के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत बना दिया । भक्तिकाल के कवियों में तुलसीदास का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। तुलसी का काव्य आत्मसम्मान, प्रेम, संघर्ष तथा आत्मविश्वास का काव्य है। उनका काव्य परम्परावादी लोगों के लिए जितना मनोहर है उतना ही शिक्षित-अशिक्षित तथा साधारण पाठकों को भी प्रिय है। तुलसी की लोकप्रियता का आधार भक्ति मात्र नहीं है बल्कि लोकजीवन का व्यापक चित्रण है जिसमें गरीबी, अकाल, नारी समस्या, संत-असंत तथा दैहिक, दैविक व भौतिक ताप का वर्णन उन्होंने विशेष रूप से किया है। इस बात का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि हिन्दी साहित्य का सर्वमान्य एवं सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य 'रामचरितमानस' मानव संसार के साहित्य के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों और महाकाव्यों में से एक है और रामचरितमानस की प्रति किसी न किसी रूप में लगभग भारत के प्रत्येक घर में विद्यमान मिलती है। विश्व के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य ग्रंथ के साथ 'रामचरितमानस' को ही प्रतिष्ठित करना समीचीन प्रतीत होता है। प्रसाद जी लिखते हैं :-

राम छोड़कर और की, जिसने कभी न आस की,

रामचरितमानस-कमल, जय हो तुलसीदास की।

KEYWORDS:

तुलसीदास, रामभक्ति साहित्य, सामाजिक और मानवतावादी दृष्टिकोण

रामचरितमानस : रामचरितमानस एक विराट मानवतावादी महाकाव्य है जिसके अंतर्गत महाकवि तुलसीदास जी ने श्रीराम जी के व्यक्तित्व को इतना लोकव्यापी और मंगलमय रूप दिया है कि उसके स्मरण से हृदय में पवित्र और उदात्त भावनाएँ जाग उठती हैं। परिवार और समाज की मर्यादा स्थिर रखते हुए उनका चरित्र महान है तभी उन्हें 'मर्यादा पुरूषोतम' के रूप में स्मरण किया जाता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यदि कहा जाए तो राम के चरित्र में इतने अधिक गुणों का एक साथ समावेश होने के कारण जनता उन्हें अपना आराध्य मानती है। तुलसीदास जी ने अपने ग्रंथ 'रामचरितमानस' में राम का पावन चरित्र अपनी कुशल लेखनी से लिखकर देश के धर्म, दर्शन और समाज को इतना अधिक प्रेरित किया है कि शताब्दियाँ व्यतीत हो जाने पर भी 'मानस' मानव मूल्यों की अक्षुण्ण निधि के रूप में मान्य है। यही कारण है कि जीवन की समस्यामूलक वृत्तियों के समाधान और उसके व्यावहारिक प्रयोगों की स्वाभाविकता के कारण यह ग्रंथ विश्व साहित्य का महान ग्रंथ घोषित हुआ है, इसीलिए इसका अनुवाद भी विश्व की प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं में हो चुका है। एक जगह डॉ. रामकुमार वर्मा - 'संत तुलसीदास' ग्रंथ में कहते हैं कि 'रूस में मैंने प्रसिद्ध समीक्षक तिखानोव से प्रश्न किया था कि "सिया राममय सब जग जानी" के आस्तिक कवि तुलसीदास का रामचरितमानस ग्रंथ आपके देश में इतना लोकप्रिय क्यों है? तब उन्होंने उत्तर दिया था कि आप भले की राम को अपना ईश्वर मानें, लेकिन हमारे समक्ष तो राम के चरित्र की यह विशेषता है कि उससे हमारे वस्तुवादी जीवन की प्रत्येक समस्या का समाधन मिल जाता है। इतना बड़ा चरित्र समस्त विश्व में मिलना असंभव है। ऐसा संत तुलसीदास जी का रामचरितमानस है।"

वैज्ञानिक ढ़ंग से अध्ययन किया जाये तो रामचरितमानस 'बड़े भाग मानुस तन पावा' के आधार पर अधिष्ठित है, यह मानव के रूप में ईश्वर का अवतार प्रस्तुत करने के कारण मानवता की सर्वोच्चता का एक उद्‌गार है। वह कहीं भी संकीर्णतावादी स्थापनाओं से बद्ध नहीं है। वह व्यक्ति से समाज तक समग्र जीवन में उदात्त आदर्शों की प्रतिष्ठा भी करता है। 'रामचरितमानस' में उन्होंने अपने समय में शासक या शासन पर प्रत्यक्ष रूप से कभी भी प्रहार नहीं किया, लेकिन सामान्य रूप से, जिनके शासनकाल में प्रजा दुःखी रहती है उन्होंने उन शासकों को यह कहकर कोसा -

जासु राज प्रिय प्रजा दुःखारी, सो नृप अवसि नरक अधिकारी।

'रामचरितमानस' में वर्णित रामराज्य के विभिन्न अंग समग्रतः मानवीय सुख की कल्पना के आयोजन में विनियुक्त हैं। रामराज्य में उन्होंने जिस स्थिति का चित्र अंकित किया है वह कुल मिलाकर एक सुखी समाज की स्थिति है। इस प्रकार रामराज्य में लोकमंगल की स्थिति के बीच व्यक्ति के मात्र कल्याण का विधान नहीं किया गया है। इतना ही नहीं, तुलसीदास जी ने राम राज्य में शरीर के निरोग रहने के साथ ही पशु-पक्षियों के उन्मुक्त विचरण और निर्भीक भाव से चहकने में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की उत्साहपूर्ण और उमंगभरी अभिव्यक्ति को भी एक वाणी दी है -

अभय चरहिं बन करहिं अनंदा।

सीतल सुरभि, पवन वट मंदा ।

गुंजत अलि लै चलि -मकरंदा ।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि रामराज्य एक ऐसी मानवीय स्थिति का द्योतक है जिसमें समष्टि और व्यष्टि दोनों सुखी हैं। तुलसीदास जी ने अपने काव्य की रचना केवल विदग्धजन के लिए नहीं की है। बिना पढ़े-लिखे लोगों की अप्रशिक्षित काव्य रसिकता की तृप्ति की चिंता भी उन्हें उतनी ही थी जितनी विज्ञजन की। 'रामचरितमानस' केवल रामकाव्य नहीं है, वह एक शिव काव्य भी है, हनुमान काव्य भी है, व्यापक संस्कृति काव्य भी है। शिव विराट भारत की एकता के प्रतीक भी हैं।

सामाजिक और मानवतावादी दृष्टिकोण

तुलसी कृत 'रामचरितमानस' का मंथन करने वाले विद्वान उसे भक्ति का ग्रंथ मानते हैं, यह सत्य भी है। परन्तु भक्ति के साथ-साथ उसमें समाज और मानवता के कल्याण का जो चिन्तन दिखाई पड़ता है उतना उस काल में अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं पड़ता । महाकवि तुलसीदास उन महान कवियों की उच्चकोटि में आते हैं जो जगत प्रवाह में बहते नहीं बल्कि ऐसे प्रवाह की दिशा को मोड़ने में सफल होते हैं। वे अपनी कृतियों में धर्म, दर्शन, नीति, समाज और मानवता का ऐसा सुन्दर वर्णन प्रस्तुत करते हैं कि व्यक्ति उस पर चलकर सदैव सुख शान्ति का ही हकदार होता है। वे समाज व मानव चेतना को समग्रता में ग्रहण करते हैं। इसीलिए उन्हें व्यापक मानवता का कवि भी कहा जा सकता है। क्योंकि जो वृक्ष आकाश में जितना ऊंचा होता है उसकी जड़ें धरती के भीतर उतनी ही गहरी भी होती हैं।

1. तत्कालीन समाज का चित्रण : भारतीय समाज की रचना जिन तत्त्वों के ताने-बाने से हुई है उसमें वर्णों और जातियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राचीनकाल में आर्य, यक्ष, व्रात्य, नाग, देव,दैत्य, असुर, किन्नर और विद्याधर भारत में आये और परवर्ती काल में शक, हूण, यवन, तुर्क, पठान, पारसी, कम्बोज एवं मंगोल आदि जातियाँ भारत आयीं जिससे समाज में संघर्ष और विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं। हमारे तत्कालीन मनीषियों ने उनका समाधान समय पर निकाला । तुलसीदास के समय का सामाजिक ढ़ाँचा बदला हुआ था, भिन्न था । इस समय वर्ण व्यवस्था और ऊंच-नीच का बोलबाला अत्यधिक था । आश्रम व्यवस्था समाप्त हो चुकी थी फिर भी समाज में साधु-संतों, भक्तों व योगियों का सम्मान था । समाज में दिखावे की प्रवृति ज्यादा थी। मुस्लिम शासकों द्वारा हिन्दू जनता के प्रति दुर्व्यवहार अक्सर होता दिखाई देता था, जिससे आतंकित होकर हिन्दू अपने को मुस्लिम प्रजा से भिन्न मानने को बाध्य होना पड़ता था । महिलाओं के लिए समाज में अनेक बंधन तथा जीवन भयपूर्ण था । उनके लिए स्वतंत्रता और अधिकार न के समान थे। आर्थिक दृष्टि से वे पूरी तरह पुरुषों पर आश्रित थीं। समाज में उन दिनों दास प्रथा का भी प्रचलन था । भारतीय मुस्लिम समाज की स्थिति भी हिन्दूओं से ज्यादा भिन्न नहीं थी। बहुविवाह जैसी सामाजिक कुरीति भी व्यापक रूप में थी। तत्कालीन समाज धनी और निर्धन दो वर्गों में बंटा हुआ था । सामान्य जनता त्रस्त थी। राजा के दर्शन प्रजा को नहीं होते थे । राजा प्रजा की और प्रजा राजा की भाषा समझने में नाकाम थे। परिणामस्वरूप सामाजिक अव्यवस्था चारों ओर देखने को मिलती थी। तुलसी 'रामचरितमानस' में लिखते हैं -

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख भली,
बनिक को बनिज न, चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग, सीद्यमान सोच बस,
कहै एक एकन सो कहां जाई का करी ।।

2. रामराज्य का आधार वर्णाश्रम व्यवस्था : तुलसी के रामराज्य का आधार वर्णाश्रम व्यवस्था है। तत्कालीन राम के राज्य में समाज पूर्ण रूप से चार वर्णों में बंटा हुआ था । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र। सब लोग अपने-अपने धर्म का पालन करते थे और सबका आचरण मर्यादित होता था । वेद-शास्त्रों में लोगों की रूचि थी। प्रजा निर्भीक और शोकरहित थी। चारों पदार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष बहुत ही सुलभ थे। वर्णाश्रम व्यवस्था के अंतर्गत मानव जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास इन चार आश्रमों में विभाजित किया गया था। किसी भी व्यक्ति के जीवन का इससे अच्छा क्रमिक विकास और क्या हो सकता है। तुलसी व्यक्ति और समाज के स्तर पर इसी वर्ण और आश्रम व्यवस्था के प्रबल समर्थक थे। प्रजा किसी भी राजा के लिए उसकी संतान की तरह होती है, जिस प्रकार व्यक्ति अपनी सन्तान के लिए चिंतित रहता है उसी तरह राजा भी हर प्रकार से अपनी प्रजा की भलाई करता है। तुलसीदास लिखते हैं -

जासु राज प्रिय प्रजा दुःखारी, सो नृप अवसि नरक अधिकारी ।

मुखिया मुख सो चाहिए खान पान को एक।
पालई पोषई सकल अंग तुलसी सहित विवेक।।

3. पारिवारिक सामंजस्य एवं मानवीय मूल्य : 'रामचरितमानस' में राम के परिवार का जो आदर्श तुलसीदास जी ने प्रस्तुत किया वह भारतीय समाज एवं परिवार में अनुकरणीय है। पारिवारिक सामंजस्य का जैसा अनूठा उदाहरण तुलसीदास राम के परिवार का करते हैं वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। आज भी माता-पिता अपने बड़े भाई को अपनी अन्य सन्तानों से राम का उदाहरण देकर कर्तव्य भावना की याद दिलाते हैं। परिवार का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति पिता होता है, उचित-अनुचित का विचार किये बिना उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। तुलसीदास जी जीवन की सार्थकता और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए ही राम के परिवार को 'आदर्श परिवार' और 'रामराज्य' को आदर्श राज्य के रूप में वर्णित करते हैं। भारतीय मनीषियों ने सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखा और सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात की। तत्कालीन समाज में व्याप्त विलासिता, अत्याचार, नैतिक पतन और रूढ़िवादिता ने उन्हें प्रभावित किया और उन्होंने 'रामचरितमानस' के माध्यम से इन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया । वे एक सुसंगठित, सुशिक्षित और सुसंस्कृत समाज की कल्पना रखते हैं जहाँ राजा दयालु एवं प्रतापी हो तथा प्रजा बुद्धिमान और कर्तव्य का पालन करने वाली हो। समाज की ईश्वर के प्रति असीम श्रद्धा हो।

4. भक्ति का समाजीकरण : तुलसी काव्य का महत्त्वपूर्ण मूल्य भक्ति है। भक्ति मार्ग के रागात्मक स्वरूप को नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि भक्ति में रागात्मकता के प्रवेश के भी कई कारण हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि इस रागात्मकता के व्यूह में भक्त कवियों ने बौद्धिक ज्ञान की प्रक्रिया का निषेध कर दिया हो। उनकी विचारधारा बौद्धिक तथा लौकिक जगत् के प्रति सचेत रही। तुलसी के काव्य में मनुष्य की संवेदनात्मक अनुभूतियों को विकास का पूर्ण अवसर मिला है। राम वनगमन, भरत-प्रसंग, लक्ष्मण मूर्छा का प्रसंग विशेष उल्लेखनीय हैं। तुलसीदास लिखते हैं -

जथा पख बिनु खग अति दीना । मनि बिनु फनि करिबर कर हीना ।।

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौ ज़ड दैव जिआवै मोही।।

5. अहं तथा स्वार्थ का विरोध : तुलसी ने अपने व्यक्तित्व को इतना साधारण बना दिया है कि वे अपनी काव्य क्षमता को राम के प्रभाव से जोड़ देते हैं। स्वार्थ तथा अहंकार उस युग की सामन्ती मानसिकता थी जिसके प्रभाव से सामान्यजन भी मुक्त नहीं था । अत्याचार और शोषणतंत्र के उपादान जब पूरे समाज पर अपना प्रभाव डालने लगते हैं तो समाज भी जड़ता की स्थिति में पहुंच जाता है। तुलसी ने अपने काव्य में अहंकार तथा स्वार्थ का विरोध करके इस जड़ता को तोड़ा है। उन्होंने अपने काव्य में देवताओं तक को स्वार्थी बताया है। मुनियों और तपस्वियों के विषय में तुलसी 'रामचरितमानस' में लिखते हैं -

नारी मुई गृह सम्पति नासी। मूड़ मुड़ाय भये सन्यासी।।

तुलसी ने राम के माध्यम से रावण पक्ष का विनाश प्रस्तुत किया है, सामन्ती राज्य का तिरस्कार तथा निर्वासित कर्म-संघर्षमय जीवन प्रस्तुत किया है, उसके व्यापक मानवीय संदर्भ हैं जो न केवल माता-पिता, भाई-बंधु, स्वामी-सेवक, राजा-प्रजा, गुरु का सम्मान, शत्रु का विनाश आदि का प्रतिनिधित्व करते हैं बल्कि वे व्यापक दृष्टिकोण के साथ सम्पूर्ण मानवीयता के रक्षा-कवच बन जाते हैं, जो प्रेम,सहयोग, सत्संग, उदारता, परहित तथा मानवीय कर्म की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। तुलसीदास जी ने एक लोकवादी कवि के रूप में अपने चरित्रों के माध्यम से समाज तथा लोक का उत्थान किया है तथा साथ ही सामन्ती प्रथा के विरोध के स्वर को भी तीव्र किया है। वे सामन्ती मूल्यों का विरोध करते हैं और उन्हें जन-सामान्य का करुण दस्तावेज़ बताते हैं ।

रामभक्ति काव्य प्रत्येक ऐतिहासिक युग में, प्रत्येक धार्मिक सम्प्रदाय में तथा प्रत्येक युग के सामाजिक और नैतिक चिंतन में ढ़लते हुए विभिन्न समस्याओं के समाधान में सदैव सहायक सिद्ध हुआ है। वैसे तो राम काव्य की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। संस्कृत साहित्य में रामकाव्य का विपुल भंडार है, हिन्दी के अनेक कवियों पर बाल्मीकि का ऋण तो है ही, इसके साथ-साथ अन्य कवियों के प्रभाव को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता । यदि तुलसी से हिन्दी राम काव्य की समर्थ शुरुआत मान लें तो तुलसी ने राम को 'पर-ब्रह्म' के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया । इसने राम कथा को रामभक्ति के रूप में परिवर्तित कर दिया । 'रामचरितमानस' का अध्ययन करने से हमें ज्ञात होता है कि तुलसीदास के काव्य की समय सिद्ध लोकप्रियता इस बात का प्रमाण है कि वैदिक युग से लेकर अत्याधुनिक युग तक रामकाव्य अपने विशिष्ट योगदान से साहित्य की शोभा और समृद्धता में श्रीवृद्धि करता आया है। भक्तिकाल में तो तुलसीदास ने अपना सम्पूर्ण जीवन ही राम-भक्ति व राम-नाम के गुणगान में ही समर्पित कर दिया। निःसंदेह तुलसीदास के काव्य की लोकप्रियता का श्रेय बहुत अंशों में उसकी अंतर्वस्तु को है। समग्रतया, तुलसीदास रचित रामकाव्य विश्वस्तर पर सफल काव्य रहा है।

REFERENCES

1. मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम (जीवन और दर्शन), जयराम मिश्र, लोकभारती प्रकाशन-इलाहाबाद।

2. तुलसी-राम कथा, विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी', सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली - 1।

3. रामचरितमानस के अनुवाद, डॉ. गार्गी गुप्त, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली-01

4. सब धर्मों की बुनियादी एकता, डॉ. भगवान दास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी ।

5. भक्तिकाव्य और मानवमूल्य, वीरेन्द्र मोहन, प्रकाशन संथान, नई दिल्ली-110002 ।

6. तुलसी की काव्य भाषा, डॉ. हरिनिवास पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी- 221001।

7. हिन्दी रामकाव्य : विविध आयाम, डॉ. मदन गुलाटी, जनप्रिय प्रकाशन, दिल्ली - 110032।

8. धर्म और संस्कृति, प्रो. आर. एन. पाल, भारत प्रकाशन, जालंधर ।

शोधकर्ता :-
डॉ संजीव कुमार, सहायक प्रोफेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय बीटन,
जिला -ऊना (हिमाचल प्रदेश)
दिनांक : 12 जुलाई 2019